संस्कृत नाट्य–शास्त्र में नायिका का स्वरूप

*डॉ. बंशी धर रावत

शोध सारांश

नाट्य के प्रमुख तत्त्वों वस्तु, नेता व रस में से जिस प्रकार नेता का अपना विशिष्ट महत्व होता है उसी प्रकार नायिका का भी महत्व होता है वह भी उस नाट्य की प्रधान तत्त्वों में अपना विशिष्ट स्थान रखती है। नायिका के अभाव में नाटक नीरस लगता है।

श्रृंगार रस के आलम्बन स्वरूप नायिका का संस्कृत नाटकों में अन्यतम स्थान है। नायिका नायक की भाँति रूपक का प्रधान पात्र समझी जाती है और नायक की भाँति ही वह नाटकीय कथा की श्रृंखला को अग्रसर करती हुई अन्त तक ले जाती है।

किन्तु इतना होते हुये भी नाट्य–शास्त्र, काव्यशास्त्र और कामशास्त्र सम्बन्धी ग्रन्थों में नायिका के लक्षण के सम्बन्ध में उतना अधिक विवरण नही मिलता है। जितना कि नायक के संबंध में।

नाट्य शास्त्र के प्रथम अध्याय में स्त्रीपात्र (नायिकाओं) के उद्भव के संबंध में वर्णन मिलता है।[1]

कैशिकी वृत्ति से युक्त नाटक का अभिनय केवल पुरूषों द्वारा नही किया जा सकता[2] इस कारण से भरत ब्रह्म से स्त्री रूप द्रव्य माँगते है।[3]

यह सुनकर ब्रह्मा जी ने नाट्य के अलंकार (कैशिकी वृत्ति) में चतुर मंजुकेशी, सुकेशी, मिश्रकेशी, सुलोचना, सौदामिनी, देवदत्ता, देवसेना, मनोरमा, सुदंती, सुन्दरी, विदग्धा, विपुला, सुमाला, सन्तति, सुनन्दा, सुमुखी, मागधी, अर्जुनी, सरला, केरला, धृति, नन्दा और सुपुष्कला नाम की चौबीस अप्सराओं (नायिकाओं) की रचना की।[4]

नाट्य शास्त्र में एक ही स्थान पर नायिका की रक्षिका सरस्वती का उल्लेख मिलता है। भरत के मत से नायक की रक्षा इन्द्र करता है और नायिका की रक्षा सरस्वती करती है।–

"नायकं रक्षतीन्द्रस्तु नायिकां तु सरस्वती "

नाट्य शास्त्र में नायिका का विशिष्ट स्थानं किन्तु बड़े आश्चर्य की बात है। कि उसमें नायिका की समुचित परिभाषा दृष्टि गोचर नहीं होती। भरत ने विभिन्न प्रकार की नायिकाओं, रंगमंच पर उनके अवतरण तथा उनके स्वभाविक अलंकार–आभूषण और प्रसाधन आदि के सम्बन्ध में विस्तृत वर्णन तो किया है परन्तु आदि नायिका केस, साधारण लक्षण पर विशेष विचार नहीं किया है।

भरत और अन्य नाट्यशास्त्र के लेखकों ने साधारण रूप नायिका के भेदों के तथा उनकी विशेषताओं के जो वर्णन

किये हैं उन विशेषताओं के आधार पर नायिका के स्वरूप की कल्पना अवश्य की जा सकती है।

कालिदास, भवभूति आदि के नाटकों में भी नायिका सम्बन्धी उल्लेखों के आधार पर नायिका के प्रकृत स्वरूप की झाँकी प्रस्तुत की जा सकती है।

नाट्यशास्त्र के काशी संस्करण के पैतीसवें अध्याय में नायिका की सामान्य विशेषताओं का उल्लेख

1. नाट्यशास्त्र (बड़ौदा संस्करण) प्रथम भाग (1/43)
2. नाट्यशास्त्र (बड़ौदा संस्करण) प्रथम भाग (1/45–46)
3. नाट्यशास्त्र (बड़ौदा संस्करण) प्रथम भाग (1/44)
4. नाट्यशास्त्र (बड़ौदा संस्करण) प्रथम भाग (1/47–50)

नाट्यशास्त्र काशी संस्करण में विपुला के लिए विविध, धृति के लिए अन्धती सुपुष्कला के लिए सुपुष्पकला और कलमा पाठ भेद मिलता है, नाट्यशास्त्र, (काशी संस्करण) 1/48–50 मिलता है। भरत के अनुसार नायिका रूप, गुण, शील, यौवन, माधुर्य, शक्ति–सम्पन्न, विशद्, स्निग्ध, मधुर, पेशल–वचन, मामक्षुभिता, लय और ताल को जानने वाली तया रसों से युक्त होती हैः

रूपगुणशीलयौवनमाधुर्य शक्ति सम्पन्ना।
विशदा स्निग्धा मधुरा पेशलवचनाभिरक्तकष्ठीव।।
योग्या यामक्षुभिता लयतालज्ञा रसैस्तु संयुक्ता
एवं विधगुणैर्युता कर्तव्या नायिका तज्ज्ञैः।।[1]

नाट्यशास्त्र के कलकत्ता संस्काण में नायिका को उपर्युक्त सामान्य विशेषताओं के अतिरिक्त कुछ और उन विशेषताओं का उल्लेख हुआ है जिनको काशी संस्करण में वर्णित नायिका की विशेषताओं के अन्तर्गत नहीं गिनाया गया है।

मनमोहन घोष द्वारा संपादित नाट्यशास्त्र में नायिका में उपर्युक्त आभरणों विशेषताओं के अतिरिक्त कुछ और विशेषताएँ भी होती हैं। उदाहरणार्थ– नायिका सभी प्रकार के आभरणों, गन्ध और मालाओं से युक्त भी होती है।[2]

"सर्वाभरण संयुता गन्धमालयोशोभिता"।।[3]

नायिका के स्वरूप की कल्पना नायक के समान ही है यदि ध्यान से देखा जाए तो एक प्रकार से यह ज्ञात होगा कि नायक और नायिका में कोई अन्तर नहीं है।

एक अन्य दृष्टिकोण से नायक स्त्री अथवा पत्नी ही नायिका कहलाती है।

"नायकस्य स्त्री नायिका।"

आधुनिक पाश्चात्य नाट्यशास्त्र में यह आवश्यक नहीं हैं कि नायक की प्रिया या पत्नी ही नायिका हो। स्त्रियों में से जिसका नाटकीय कथा प्रवाह में प्रधान भाग हो अर्थात् जो मुख्य अभिनय करती हो और व्यक्तिगत विशेषताओं से सम्पन्न हो वही पाश्चात्यों के अनुसार नायिका होती है, चाहे वह नायक की प्रिया हो या कोई और। नायिका के सम्बन्ध में यह विचार संस्कृत नाटको में प्रयोग में नहीं लाया जा सकता कहने को संस्कृत नाटकों की नायिकायें विशेष ध्यान देने योग्य विशेषताएँ रखती है। भारतीय नाट्यशास्त्र के अनुसार अधिकतर नायक की प्रिया ही नायिका कहलाती हैं।

भरत ने नायिका की परिभाषा तो ठीक नहीं दी है किन्तु नायक की परिभाषा पर अवश्य विचार प्रकट किये है

धनञ्जय के अनुसार नाटक का वह पात्र नायक है जो कि नाट्याभिनय के फल में आनन्द लेता है और नाटक का अन्तिम परिणाम सदा नायक की ओर ही होता है। इस दृष्टि से नायिका नाटक में स्वयं फल हो सकती हैं, क्योंकि कुछ समय के लिए स्त्री और कन्या फल होती भी है। अतः इसी आधार पर नायक फल भोक्ता कहला सकता है। इसलिए फल नायिका के स्वरूप की कल्पना के साथ कुछ सम्बन्ध रखता है। यह आश्चर्य की बात नहीं है। प्राचीन भारतीय विचार के अनुसार स्त्री अथवा नायिका भोग्या कही जाती थी। अतः फलभोक्ता स्त्री अथवा नायिका का भोक्ता हो सकती है। इस दृष्टि से नायिका वह स्त्री पात्र है जो कि नाटक के अन्त में नायक के फल के रूप में प्रकट होती हैं।

कुछ नाटको में जो परिणाम निकलता है वह स्त्री की अपेक्षा राजधानी की सफलता, शत्रुओं पर विजय प्राप्ति आदि है । इन नाटको में नायिका फल नहीं मानी जा सकती है। अतः नाटको में सिंहासन या सफलता फल हो सकता है। किन्तु वह सिंहासन या सफलता नायिका नहीं सकती है अथवा सिंहासन या सफलता को नायिका के रूप में वर्णित नहीं किया जा सकता है। अतः यह विचारणीय है कि नायिका का स्वरूप क्या है?

यह सम्भव हो सकता है कि नायक और नायिका की विशेषताएँ समान है। कुछ नाटकों में नायक नाट्याभिनय से तथा उसके निकलने वाले परिणाम से पहचाना जाता है। इसी दृष्किोण के द्वारा नायिका भी

1. नाट्यशास्त्र (काशी संस्करण) 36–62–64
2. नाट्यशास्त्र (कलकत्ता संस्करण) द्वितीय भाग 35/84–86
3. नाट्यशास्त्र, कलकत्ता संस्करण द्वितीय भाग 25/85

नाट्याभिनय से तथा उसके निकलने वाले परिणाम से पहचाना जाता है। इसी दृष्किोण के द्वारा नायिका भी पहचानी जा सकती है। अथवा नायिका की भॉति नाट्याभिनय से तथा उसके निकलने वाले परिणाम से पहचानी जा सकती है। इसलिए संक्षेप में वह स्त्रीपात्र नायिका होगी जो नायक के साथ मुख्य फल या सफलता प्राप्त करेगी।

फल में आनन्द लेने वाले नायिका स्वंय भी फल हो सकती है। नायक के दृष्टिकोण से वह फल और योग्य भी हो सकती है। अपनी चेतना के आधार पर वह भोक्ता भी हो सकती है, क्योंकि वह अनुभव, विचार और अभिनय करती है। वह किसी से कुछ कहने की इच्छा करती है, सन्तुष्ट होती है, प्रेम करती है, और रोती है। आनन्द और पीड़ा उससे सम्बन्धित है अर्थात् कभी वह आनन्दित और कभी पीड़ित होती है। संक्षेप में आनन्द पीड़ा और हाव–भाव आदि उसमें वास्तविक रूप से उपलब्ध होते है।

नायिका स्वंय भी आनन्द लेने वाली है। इसलिए नायिका की कल्पना नायक के समान ही है। भरत ने भी इसी दृष्टिकोण को स्वीकार किया है क्योंकि उसने नायिका भेद वर्णन, नायक भेद वर्णन के अनुसार ही किया है। भरत के अनुसार चार प्रकार के नायक होते है – धीरोद्धत, धीरललित, धीरोदात्त और धीरप्रशान्त–

धीरोद्धता धीरललिता धीरोदात्तास्तथैव चः।
धीरप्रशान्तकाश्चैव नायकाः परिकीर्तिताः।।[1]

इसलिए नायिकाएँ भी चार प्रकार की होती है–धीरा, ललिता, उदान्ता और निभृता–(नाट्यशास्त्र के अनुसार)

एंतास्तु नायिका ज्ञेया नानाप्रकृतिलक्षणाः।[2]
धीरं च ललिता च स्यादुदात्ता निभृता तथा।।

नाट्यशास्त्र में उपर्युक्त चार प्रकार के धीरोद्धत धीरललित आदि नायकों का और उनके सामने ही चार प्रकार की धीरललितादि नायिकाओं का उल्लेख मिलता है।

आचार्य भरत ने प्रशान्त नायक के समान धीरा और उद्धत नायक के समान निभृता नायिका का उल्लेख किया है, किन्तु प्रशान्त और धीरा में तथा उद्धत और निभृता में केवल शब्द भेद है, अर्थ भेद नही।

दशरूपक में भी भरत–सम्मत इन चार प्रकार के नायको की विशेषताओं का वर्णन मिलता है। अतः यह सम्भव है कि नायकों में पाई जाने वाली विशेषताएँ नायिकाओं की भी विशेषताएँ हो। इनका वर्णन इस प्रकार से किया जा सकता है ।

ललिताः

ललिता नायिक वह हो सकती है जो सर्वथा निश्चिन्त रहती हों, कोमल स्वभाव की हो, सुखी रहती हो तथा कलाओं (नृत्य, गीतादि) में आसक्त रहती हो।

धीराः

दशकरूपककार के अनुसार प्रशान्त नायक वह है जिसमें सामान्य प्रकार से ललित नायक की विशेषताएँ पाई जाती है।[3] भरत सम्मित धीरा नायिका[4] भी वह हो सकती है जिसमें ललिता नायिका की विशेषताएँ पाई जाती हो।

उदात्ता

उदात्ता नायिका वह हो सकती है जो महासत्व (जिसका अन्तः करण क्रोध, शोक आदि विकारों से अभिभूत न हो) अत्यन्त गम्भीर, क्षमाशील अविकथन (अपनी प्रशंसा न करने वाली) स्थिर (अचंचल मन वाली) निगूढाहंकार (अहंकार और स्वाभिमान अवश्य हो किन्तु वह विनम्रता के द्वारा छिपाया हुआ और दबाया हुआ हो) दृढव्रत (जिस बल का प्रण कर लिया है उसका अन्त तक निर्वाह करने वाली हो)।

1. नाट्यशास्त्र (बड़ौदा संस्करण) ,तृतीय भाग (24/17)
2. नाट्यशास्त्र (बड़ौदा संस्करण) तृतीय भाग (24/24)
3. दशरूपक 2/4–5
4. नाट्यशास्त्र (बड़ौदा संस्करण) ,तृतीय भाग 24/24

निभृताः

दशकरूपककार द्वारा वर्णित उद्धत नायक की विशेषताएँ भरत सम्मित निभृता नायिका की विशेषताएँ[1] हो सकती है। भरत ने उद्धत नायक के समान ही निभृता नायिका को माना है। निभृता नायिका वह हो सकती है जो घमण्ड और ईर्ष्या (मात्सर्य) से भरी हुई माया और कपट से युक्त घमण्डी, चंचल, क्रोधी तथा आत्मश्लाघी होती है।

नायक और नायिका की समानताएँ उनके स्वरूप की कल्पना की ओर संकेत करती है इसलिए यह उचित ही है कि संस्कृत नाटको में वह स्त्री पात्र ही नायिका है जो नायक के साथ नाट्याभिनय के फल से संबंध रखती है। यही मत धनिक का भी है।

दशकरूपक के द्वितीय प्रकाश में वृत्तिकार धनिक ने नायिका के नायक के सामान्य गुणों से युक्त माना है।

"नायक सामान्य गुणयोगिनी नायिकेति।।"[2]

धनिक के अनुसार नायक, विनीत, मधुर, त्यागी, दक्ष (चतुर), प्रियवंद (प्रिय बोलने वाला), रक्त लोक (लोगों को प्रसन्न करने वाला), शुचि (पवित्र मन वाला), वाग्म्रगी (बातचीत करने में कुशल), रूढवंश (कुलीन वंश में उत्पन्न), मन आदि से स्थिर, युवा अवस्था वाला, बुद्वि, उत्साह, प्रज्ञा, कला तथा मान से युक्त, शूर दृढ़ तेजस्वी, शास्त्र ज्ञाता तथा धार्मिक होता है।

नेता विनीता मधुरस्त्यागी दक्षः प्रियवंदः।
रक्तलोकः शुचिर्वाग्मी रूढवंशः स्थिरोयुवा।।
बुध्दव्युत्साहस्मृतिप्रज्ञाकलामानं समन्वितः।
शूरो दृढ़श्च तेजस्वी शास्त्र चक्षुश्च धार्मिकः।।[3]

इस प्रकार विदित होता है कि धनिक ने नायक के सामान्य गुणों को तो सविस्तार उदाहरण सहित वर्णन किया है किन्तु नायिका नायक के सामान्य गुणों से युक्त होती है केवल इतना ही कहा है।

किन्तु धनिक के "नायक सामान्य गुणयों गिनी नायिका" कहने मात्र से ज्ञात हो जाता है कि नायक के उपयुक्त सामान्य गुण–विनीत आदि नायिका में भी होने चाहिए।

इस प्रकार नाट्यशास्त्र के आधार पर नायिका का सामान्य स्वरूप बताने का प्रयत्न किया गया है।

1. दशरूपक (2/5–6)
2. दशरूपक, धनिक – डॉ भोलाशंकर व्यास सम्पादित ,पृ. (88)
3. दशरूपक, धनिक – डॉ भोलाशंकर व्यास सम्पादित ,पृ. (2/1–2)

***व्याख्याता**
संस्कृत विभाग
स्व. राजेश पायलट
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
बाँदीकुई (दौसा)